दैनिक जागरण रांची, 24 जून 2017

दुग्ध क्रांति | प्रतिमाह हो रहा है 10 लाख का कारोबार

नियोजन धारा से जुड़ रही है श्वेत धारा

राजीव ● दुमका

झारखंड की उपराजधानी दुमका में दूध की धार से श्वेत क्रांति की बहार लाने की कोशिशों को अब बल मिलने लगा है। गव्य विकास विभाग व झारखंड मिल्क फेडरेशन के सहयोग से दुमका जिले में प्रतिदिन 500 से अधिक परिवारों के माध्यम से सात हजार लीटर दूध संग्रह हो रहा है। खास बात यह किइस कारोबार में महिलाओं की भूमिका अहम है। झारखंड मिल्क फेडरेशन गुणवत्ता के आधार पर औसतन 24 से 42 रुपये प्रति लीटर के हिसाब से दूध क्रय करता है। इस वजह से प्रतिमाह औसतन 10 लाख रुपये से अधिक का कारोबार हो रहा है। इस प्रकार से अब जिले के लोगों के रोजगार में भी दुग्ध उत्पादन सहायक हो रही है ।

कैसे मापी जाती है गुणवत्ता : दूध की गुणवत्ता मापने के लिए कंप्यूटराइज्ड दूध जांच मशीन और ऑटोमेटिक दूध कलेक्शन यूनिट की स्थापना की गई है। दूध की शुद्धता जांच करने की जिम्मेदारी दूध मित्रों की है। दूध संग्रह के बाद इसे टैंकर के माध्यम से देवघर भेजा जाता है और वहां इसे पाउच में भर कर फिर मेधा डेयरी के नाम से इसे बाजार में उतारा जाता है। फिलहाल दुमका और जरमुंडी के बाजार में प्रतिदिन तीन हजार लीटर मेधा दूध की खपत है।

श्वेत क्रांति को बढ़ावा देने और किसानों को दूध की खपत के लिए सहज बाजार उपलब्ध कराने के लिए जिला गव्य विकास के माध्यम से हंसडीहा के बनियारा में एक दूध शीतक केंद्र के अलावा जरमुंडी के नोनीहाट और जामा के बागझोपा में एक-एक बल्क मिल्क कूलर को संचालित किया जा रहा है।

दुग्ध उत्पादन से जुड़े युवा व महिलाएं : बागझोपा सेंटर को चला रहे जगदीश राउत बताते हैं कि उनके सेंटर से तकरीबन 1100 लीटर दूध प्रतिदिन संग्रह हो रहा है। पूरी व्यवस्था सुचारू और पारदर्शी ढंग से चल रही है।

दुमका जिले के जामा के बागझोपा में संग्रह केंद्र में दूध जमा करते पशुपालक ● जागरण

गव्य विकास विभाग व झारखंड मिल्क फेडरेशन के सहयोग से दुमका जिले में प्रतिदिन 500 से अधिक परिवारों के माध्यम से सात हजार लीटर दूध का संग्रह

जनसंख्या नियोजन